गाय मेरी माता है

कहानी / शरोवन

***

'मामा। मैंने उस भिख़ारी को आटा हिन्दू और ईसाई जानकर नहीं दिया है। वह हमारे दरवाज़े पर आया था। बस मैंने उसको आटा दे दिया। फिर वह गाय तो . . .'

***

कैसा अजीब और अविश्वसनीय लगेगा आपको यह सुनकर कि जब कोई मसीही जन यह कहे कि गाय मेरी माता है? निश्चय ही किसी को बुरा लगे न लगे, लेकिन एक विश्वासी को ख़ीज तो होगी ही ऐसा सुनकर? फिर भी इस सच्चाई से कोई भी मुकर नहीं सकेगा कि जो भी मां जब अपने बच्चे को अपना ही दूध पिलाकर पालती-पोसती है तो उसे माता या मां ही कहा जायेगा। देखिये उपरोक्त बात में क्या सच्चाई है?

मार्च 4, सन् 1952 का वह दिन जब शनिवार की संध्या को लगातार बारिश हो रही थी, और ठंडी हवाओं के कारण वातावरण का सारा बदन गर्मी की ऋतु होने के बाद भी ठिठुरने लगा था। उत्तर-प्रदेश के एक शहर सहारनपुर की सेमनरी में एक पादरी दम्पत्ति के उनके मसीही प्रचारक के प्रशिक्षण के दौरान, उनके घर में उनकी तीसरी संतान के तौर पर एक निहायत ही कमज़ोर और समय से पूर्व सात माह के अपरिपक्व बालक ने जैसे इस दुनियां में जन्म लेने की ज़िद पकड़ ली थी। सही भी था कि एक अनचाही संतान और वह भी इसकदर कमज़ोर और कुरूप सी कि जो भी देख रहा था केवल देखता और सोचकर ही रह जाता था कि, 'हे परमेश्वर, तेरी भी महिमा अपार है? इस बच्चे का तो तू ही मालिक है।' कहने का आशय है कि उस बच्चे को जन्म देनेवाली उसकी मां भी 'एनेमिक' और कमज़ोर थी। उसके पास एक तो अपने बच्चे को

पिलाने के लिये दूध ही नहीं था, दूसरा वह बच्चा भी इसकदर कमज़ोर कि उसके भी होठों में इतनी ताकत नहीं थी कि वह स्वंय ही अपनी मां से 'फीड' भी कर सकता। भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त किये मात्र पांच वर्ष ही हुये थे। देश हर प्रकार की मुसीबतों से जूझ रहा था। बाज़ार में तब नवजात शिशु के लिये वर्तमान के हिसाब से किसी भी तरह का भोजन या दूध भी उपलब्ध नही था। लिहाज़ा उन दिनों में जो इंग्लैंड का बिट्रिश डाक्टर उस बच्चे का था, उसने यही सलाह दी कि बच्चे को ऊपरी दूध देकर पाला जाये। तब बच्चे के लिये भैंस का दूध हल्का करने के लिये पानी मिलाकर दिया जाने लगा। लेकिन वह बच्चा भैंस का भारी दूध भी नहीं पचा सका था। उसकी पाचनक्रिया इतनी अधिक कमज़ोर थी कि वह भैंस का भारी दूध भी हज़म नहीं कर सकता था। इस समस्या को देखते हुये बालक के लिये तब गाय के दूध का इंतज़ाम किया गया। परमेश्वर की अपार कृपा और इंतज़ाम था कि बालक को गाय का दूध रास आ गया। वह गाय का दूध पीकर पलते हुये किलकारियां लेने लगा। फिर उस बालक ने गाय का दूध तब तक पिया जब तक कि वह स्वंय ही अच्छी तरह से खाने-पीने नहीं लगा।

इस प्रकार से वह बालक बढ़ते हुये जवान हुआ। कॉलेज गया। पढ़ने लगा। फिर एक दिन बातों-बातों में उस बालक ने अपने घर में उपरोक्त चित्र में दी गई पुराने ज़माने की चलने वाली नवजात शिशु को दूध पिलानेवाली दूध की बोतल देखी तो अपनी मां से यूं ही पूछ लिया कि यह दूध की बोतल कैसे घर में आई? तब उसकी मां ने उससे कहा कि,
'तू ही हमारे घर में केवल शनीचरा है (अर्थात् शनिवार को पैदा हुआ है)। बाकी तो तेरे भाई-बहन रविवार को पैदा हुये हैं। यह दूध की बोतल भी केवल तेरे ही लिये खरीदी गई थी। मेरे पास तेरे लिये दूध नहीं था और तेरे जन्म के समय भी मैं मरते-मरते बची थी।'
अपनी मां के मुख से ऐसी बात सुनकर उस बालक को ना तो कोई खुशी हुई और ना ही कोई दुख भी। वह ना तो हंस सका और ना ही रो सका।

फिर समय गुज़रा। दिन बदले।
एक दिन वह बालक जो अब तक सोचने-समझनेवाला युवक हो चुका था। अपने घर के बाहर एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। जाड़े के दिन थे। सुबह की कोमल और मख़मली धूप की किरणें वातावरण की हरेक वस्तु को बगैर किसी ख़ौफ के चूम रही थीं। तभी एक साधू भगवा वस्त्र पहने हुये अपनी एक गाय को लिये वहां आया और उस बालक से जो अब तक जवान हो चुका था, से बोला,
'बच्चा। इस बूढ़ी गाय-मैय्या को भिक्षा मिल जाये तो भगवान तेरा सदा भला करेगा।'

'?'
लड़के ने उस भिक्षुक को एक पल देखा। फिर गाय की तरफ। गाय को देखकर लड़के को तुरन्त ही अपनी मां की कही हुई अतीत की बात याद आई, तो वह उस भिक्षुक से बोला,
'बाबा, अभी ठहरना। मैं आता हूं।' कहकर वह लड़का शीघ्र ही घर के अन्दर गया और कनस्तर, जिसमें आटा रखा जाता था, में से एक कटोरा आटा भरा और रसोई में जाकर रोटी की टोकरी में से एक रोटी निकालकर बाहर आया। लड़के की मां को भनक लगी कि वह करता क्या है? यह सोचती हुई वह तुरन्त ही बाहर आई और सब देखा। तब तक लड़का गाय को रोटी खिला चुका था और आटा उस भिक्षुक की थैली में भी डाल दिया था। लड़के की मां यह सब देखकर दंग रह गई। भिक्षुक और गाय के जाते ही उस लड़के की मां उसे डांटते हुये बोली,
'ये तूने क्या किया। हम लोग ईसाई हैं। हम यह सब कुछ नहीं करते हैं?'
'मामा। मैंने उस भिख़ारी को आटा हिन्दू और ईसाई जानकर नहीं दिया है। वह हमारे दरवाज़े पर आया था। बस मैंने उसको आटा दे दिया। फिर वह गाय तो . . .'
'गाय क्या?' मां ने आश्चर्य से पूछा तो वह बोला,
'वह तो एक तरह से मेरी मां है। उसने मुझे अपना दूध पिलाकर पाला है।'
'बेवकूफ कहीं का?' मां ने एक झापड़ उस लड़के के गाल पर मारा। फिर आगे बोली,
'असली मां सामने खड़ी है, और गाय को मां बोलता है?' कहते हुये क्रोध में भनभनाती हुई वह घर के अन्दर चली गई।
'?' लड़का कुछ भी नहीं बोल सका।
उसने अपनी मां का थप्पड़ खाने के बाद अपने गाल पर हाथ फेरा, फिर न जाने क्या सोचकर वह जल्दी से भागता हुआ कम्पाऊंड के बाहर सड़क पर आया और निगाहें उठाकर देखा तो वह भिक्षुक अपनी गाय के साथ थोड़ी दूर निकल गया था। वह लड़का भागता हुआ उनके पास तक पहुंचा और बोला कि,
'बाबा, ज़रा ठहरना तो।'
'?'
भिक्षुक उस लड़के तो देखता हुआ एक संशय के साथ आश्चर्य से अपने स्थान पर ठहर गया तो वह लड़का गाय के पास आया और उसके सिर पर अपना हाथ रखता हुआ बोला कि,
'शायद, आज मैंने तेरा ऋण चुका दिया है?'
'?'
लड़के के मुख से उपरोक्त बात सुनकर वह भिक्षुक आश्चर्य से बोला कि,
'बच्चा, मैं कुछ समझा नहीं? तेरा नाम क्या है?'
'नवरोश।'

‘इस नाम को कभी भी उल्टा करके मत पढ़ना। वरना काफी लोग जहां तुझे प्यार करेंगे वहीं बहुत से तुझे गालियां भी देंगे।’

समाप्त।